आधुनिक संस्कृत गद्य के संदर्भ मे अध्ययन

साधना संगम (संस्कृत विभाग), शोधकर्ता, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ स्वदेश यादव (संस्कृत), सहायक- प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

पाठ विभिन्न लेखकों के कई उपन्यासों और कार्यों पर चर्चा करता है, जिसमें ए.वी.आर. का "आनंदभारत" भी शामिल है। नागार्जुन, कविताओं का एक संग्रह पहली बार 2001 में प्रकाशित हुआ और महाभारत के संदर्भ में सेट किया गया। इसमें अमिताव गांधी के कार्यों का भी उल्लेख है, जिन्होंने पुराणों के प्राचीन भारतीय दर्शन पर विस्तार से लिखा है। पाठ में गोहभाईजी के काम पर चर्चा की गई है, जो उस समय की नवउदारवादी विचारधारा का प्रतिबिंब है। यह पाठ केरल के एक कवि डॉ. पंडिताई की कहानी और 'आनंद' नामक ऋषि की कहानी के बारे में भी बात करता है, जो आस्था के विचार के खिलाफ हैं। अंत में, इसमें 2005-06 में एस. के. कृष्णास्वामी द्वारा प्रकाशित एक लघु कहानी संग्रह "कालीवाला" का उल्लेख है, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है।

विशेष शब्द : उपन्यास , सांस्कृतिक , पुराण

उपन्यास

नविमुक्तिः

नवविमुक्ति एच.वी. द्वारा लिखित महाभारत महाकाव्य पर आधारित एक उपन्यास है। नागराज राव. यह उपन्यास पहली बार 2001 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण 2006 में प्रकाशित हुआ है।

हमें अपने इतिहास और पुराणों में ऐसी कई महान आत्माओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने बचपन में ही महान कार्य किये। अरुणि, नचिकेता और ध्रुव उनमें से कुछ के नाम हैं। अष्टावक्र को भी उनमें से एक माना जाता है। कहा जाता है कि उन्होंने अपने ज्ञान के बल पर अपने पिता को जीवनदान दिया था। डॉ. एच.वी. नागराज राव ने अष्टावक्र की कहानी को अपने उपन्यास के स्रोत के रूप में लिया है। महाभारत के वनपर्व में अष्टावक्र की कहानी है। डॉ. एच.वी. नागराजराव ने महाभारत की कहानी से प्रेरणा ली है और उन्होंने महाभारत से अष्टावक्र की इस सरल कहानी को नविमुक्ति: नामक एक सुंदर उपन्यास में बनाया है। यह उपन्यास सबसे पहले संस्कृत अनुशासन नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था और बाद में पाठकों के अनुरोध पर यह एक पुस्तक के रूप में सामने आया। उपन्यास की शुरुआत महर्षि उद्दालक के आश्रम में रहने वाले ब्रह्मचारियों के आश्रम और नियमित जीवन के सुंदर वर्णन से होती है। कहोड़ नाम का एक शिष्य है जो अपने गुणों के कारण महर्षि उद्दालक को बहुत प्रिय था। कहोड़ को मिले इस ध्यान से दूसरे शिष्य गौतम को हमेशा ईर्ष्या होती रहती थी। बाद में, महर्षि उद्दालक ने अपनी बेटी सुजाता का हाथ कहोड़ को दे दिया और उनका विवाह करा दिया। आश्रम से सुजाता की विदाई हमें कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम से शकुंतला की विद्या (शकुंतला की विदाई) की याद दिलाती है। आइए पुस्तक के पैराग्राफ पर एक नजर डालें:

कहोड़ और सुजाता अपना वैवाहिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर रहे हैं। लेकिन, एक बार उनके पुराने सहपाठी गौतम ने डाकू बन कर उन पर हमला कर दिया और उनका सारा सामान लूट लिया और उनके घर में आग लगा दी। अब, कहोड़ और सुजाता का जीवन बहुत कठिन हो गया। उनके पास गुजारा करने के लिए न तो घर है और न ही पैसे. इससे भी बड़ी बात यह है कि अब सुजाता गर्भवती है। एक बार कहोड़ वेदमंत्रों का पाठ कर रहे थे, उसी समय उन्हें किसी के हंसने की आवाज सुनाई दी। वह इधर उधर देखता है. लेकिन, सोई हुई सुजाता के अलावा कोई नहीं है. वह सवाल करता है कि यह कौन है? तब ध्वनि ने उत्तर दिया मैं आपका पुत्र हूं जो अभी अपनी मां के गर्भ में है। उन्होंने कहोड़ से कहा कि उन्होंने वैदिक मंत्रों के उच्चारण में आठ गलतियाँ की हैं। यह सुनकर क्रोधित कहोड़ को क्रोध आ गया और उन्होंने उसे शाप दे दिया कि वह आठ अंगों में समस्याओं के साथ पैदा होगा। लेकिन बाद में उन्हें इसका पछतावा हुआ और उन्होंने गर्भवती सुजाता को उसके माता-पिता के पास छोड़ दिया और खुद

धन कमाने के लिए मिथिला की ओर चले गए। वहां वे बंदी नामक पंडित से शास्त्रार्थ हार गये। जिस तरह से डॉ. नागराज राव ने शास्त्रार्थ का वर्णन किया, उससे उनके ज्ञान और शास्त्रों पर पकड़ का पता चलता है। एक बार बालक अष्टावक्र अपने दादा महर्षि उद्दालक की गोद में बैठे थे, लेकिन उनका पुत्र श्वेतकेतु वहां आया और अपने पिता की गोद खाली करने को कहा। इस घटना से अष्टावक्र निराश हो गये और उन्होंने अपनी माँ से अपने पिता के बारे में पूछा। उनकी माँ ने उन्हें पंडित बंदी से हुए वाद-विवाद के बारे में बताया। इससे बाला अष्टावक्र क्रोधित हो गए और उन्होंने उस पंडित बंदी के साथ बहस के लिए मिथिला जाने का फैसला किया।

हेमशाक्तिकम: उपन्यास का शीर्षक 'हेमा-शकटिकम्' ही पाठकों को इसके स्रोत के बारे में जानकारी देता है। क्योंकि शूद्रक की मृच्छकटिकम् संस्कृत साहित्य के पाठकों के लिए अज्ञात नहीं है, उपन्यासकार डॉ. विश्वास स्वयं इस पुस्तक की प्रस्तावना में 'मृच्छकटिकम्' से इसके संबंध की घोषणा करते हैं। इस उपन्यास में 144 पृष्ठ हैं और इसे वर्ष 2011 में संस्कृत भारती, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास के लेखक डॉ. विश्वास बेंगलुरु, कर्नाटक के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान हैं और वह प्रसिद्ध संस्कृत पत्रिका 'सम्भाषण-संदेश' के संपादकों में से एक भी हैं। उपन्यासकार ने इस उपन्यास के लिए अलग पृष्ठभूमि यानी फिल्म और टेलीविजन उद्योग को चुना, जिसे संस्कृत पाठकों ने पहले कभी नहीं देखा है। यह उनके लिए बहुत नया है. उपन्यास की शुरुआत विद्यासागर के परिचय से होती है, जो एक साधारण व्यक्ति है, जो अपनी पत्नी विपाशा और बेटे रोहित के साथ रहता है। वह संस्कृत के प्रोफेसर हैं। फिर एक दिन एक प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक देवकीनंदन बसु उनके घर आते हैं और उनसे अपने नए डेली सोप में मदद करने का अनुरोध करते हैं। यह एक संस्कृत दैनिक साबुन है जिसका नाम 'मृच्छकटिकम्' है। विद्यासागर उनकी मदद करने के लिए सहमत हुए और इसके लिए संस्कृत में संवाद लिखते हैं। बाद में शूटिंग के दौरान भी वह अभिनेताओं को संवादों के सही उच्चारण में मदद करते हैं। उस समय विद्यासागर, जो एक आम आदमी हैं, फिल्म और टेलीविजन उद्योग की चमकदार दुनिया के संपर्क में आए, लेकिन अभी भी इसके आकर्षक आकर्षण से अप्रभावित हैं। वहां सुषमा नाम की अभिनेत्री, जो डेली सोप में वसंतसेना की भूमिका निभाती है, उसकी सादगी से आकर्षित हो गई और उसे विवाहित विद्यासागर से प्यार हो गया, ठीक उसी तरह जैसे मृच्छकटिकम की वसंतसेना को विवाहित चारुदत्त से प्यार हो जाता है। शूटिंग पूरी होने के बाद, जब वह जा रही थी, विद्यासागर की पत्नी ने उससे पूछा कि उस समय मृच्छकटिकम के साथ उसका अनुभव कैसा था, वह विद्यासागर की ओर देखते हुए विपाशा को जवाब देती है कि - उसके लिए यह मिट्टी की गाड़ी नहीं है, बल्कि सोने की गाड़ी है। लेकिन वह कार्टमैन के दिमाग के बारे में नहीं जानती। और वह इस सोने की गाड़ी की यात्रा को कभी नहीं भूलेगी और वह इस यात्रा की यादों के साथ प्रस्थान कर रही है। तो, यह बहुत ही विचारोत्तेजक है और हमें लगता है कि उपन्यास का शीर्षक 'हेमा-शाकटिकम्' उपयुक्त है।

धारावाहिक - दैनिक साबुन या धारावाहिक के लिए
तारापदवी - स्टारडम
ऋत्भूत्वरिश - जमानत
मुरणदोषपरहारः - प्रूफ रीडिंग आदि।

हमें उपन्यास में कालिदास की रचनाओं जैसे मालविकाग्निमित्रम्, कुमारसंभवम्, मनु की मनुस्मृति, शंकर वेदांत और अन्य ग्रंथों के कई उद्धरण भी मिले, जो शास्त्रों के बारे में लेखक के ज्ञान को दर्शाते हैं। अंत में हमें लगा कि हेमा-शाकटिकम सचमुच एक आधुनिक संस्कृत उपन्यास है जिसमें विषय की ताजगी है। इसमें मैदान के बारे में एक कहानी है।

जो हर किसी का मन मोह लेती है और लेखक की सम्मोहक लेखन शैली, सादगी और मनोरंजन। इन सभी बिंदुओं ने हेमा- शाकटिकम् को आधुनिक संस्कृत साहित्य का एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण उपन्यास बना दिया। यह आधुनिक संस्कृत साहित्य में एच.आर.विश्वास का एक बहुमूल्य योगदान है।

अन्याका

अन्याका डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा लिखित एक संस्कृत उपन्यास है। यह उपन्यास पहली बार 2011 में संस्कृत भारती, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है। उपन्यास 212 पृष्ठों में बिखरा हुआ है। उपन्यास प्राचीन भारत का गौरव गाता है। उपन्यास का नायक विशाख गुरुकुल में पढ़ने जाता था। वह ईश्वरकृष्ण से सांख्य का अध्ययन करते हैं। वह और अधिक सीखना चाहता है। इसलिए, ईश्वरकृष्ण ने उन्हें तक्षशिला जाने की सलाह दी फिर ईश्वरकृष्ण प्राचीन शैक्षणिक निवास तक्षशिला का वर्णन करते हैं।

यत् तक्षशिला खलु विद्यायाः महती साधनास्थली । महाज्ञानी
महर्मषधौम्प्यः अत्रव स्वकीये अश्रम ईपमन्युम् अरुणिम् वेदं च उपानयत्
तेभ्यश्च ज्ञानं प्रादात् । मगधिमिथलावन्त्याकद-जनपदेभ्य आदानीमिप तिव
प्रयान्ति विद्यतहिर्न :। तिव महावैयाकरणः पारिणि : अर्थशास्त्रस्य
व्याख्याता कौरटल्यश्चाधीतवन्तौ । तक्ष शलानगरमिप □त्यन्तं राचीनम् ।
रामस्य अनुजेन भरतेन एतत् स्था पितम् । भरतस्य पुत्रो ऽअभवत् तक्ष : ।
तस्य नयमर आयं नगरी तक्षशिलेती विज्ञायते ।

वज्रमणि: वज्रमणि डॉ. रामसुमेर यादव द्वारा लिखित एक संस्कृत उपन्यास है। यह उपन्यास 2011 में परिमल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस संस्कृत उपन्यास का हिंदी अनुवाद और अंग्रेजी अनुवाद क्रमशः देवकीनंदन श्रीवास्तव और प्रोफेसर एस.रंगनाथ द्वारा किया गया है। यह उपन्यास रामायण पर आधारित है। यह लंका के राजा रावण की बहन का नाम है। हालाँकि उसका नाम वज्रमणि है, फिर भी उसके भाई उसे प्यार से शूर्पणखा कहकर बुलाते थे क्योंकि उसे नुकीले और विशाल नाखून रखने की इच्छा थी। उपन्यास 26 अध्यायों में विभाजित है। उपन्यास की शुरुआत वज्रमणि की काकिकेय विद्युज्जिह्वा के साथ प्रेम कहानी से होती है। उपन्यासकार सीता-स्वयंवर की कहानी का भी वर्णन करता है। वज्रमणि उपन्यास की नायिका है। उपन्यासकार डॉ. यादव ने उनके पात्रों का कुशलतापूर्वक एवं सुन्दर चित्रण किया है। उनके किरदारों के कई रंग हमें देखने को मिलते हैं. उपन्यास की शुरुआत में, वह एक सामान्य युवा लड़की की तरह दिखती है जो किसी ऐसे व्यक्ति की कामना करती है जो उसे अपनी बाहों में पकड़ सके। बाद में, वह प्रेमी विद्युज्जिह्वा के साथ चली गई और उससे शादी कर ली जो दुश्मन परिवार से था। विक्रम, जो वज्रमणि का पुराना प्रेमी था, उससे विवाह करने के लिए वापस आया। उनके अनुसार उन्होंने राजशाही की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए विवाह किया था। लेकिन उनकी पत्नी के साथ उनके सपने कभी साकार नहीं हो सके। तब वज्रमणि ने विक्रम की इच्छा पर पानी फेर दिया और उनसे प्रश्न करके उन्हें रोक दिया –

किन्तु विक्रम ! नारी प्रासादस्य शोभा सम्वर्धनार्थमेव भवित किम्
? किं सा पुरषस्य मनोरिनस्य साधनस्वरूपं क्रीडनं विद्यते ?4

अध्याय 20-21 में सूर्पनखा और राम-लक्ष्मण मिलन के प्रसिद्ध प्रसंग का वर्णन है। 25वें अध्याय में उपन्यासकार सूर्पनखा की शबरी से मुलाकात का वर्णन करता है। उसने वहां आश्रम में शरण ली। बाद में वह धार्मिक मार्ग पर चल पड़ीं। अंत में वह विक्रम को उसकी गलती समझाती है और उसे ऐसा करने से रोकती है। पिछले कुछ अध्यायों में, लेखक ने वज्रमणि के चरित्र का उत्थान किया और उसका नेक पक्ष दिखाया।

मुको रामगिरिर्भूत्वा

मुको रामगिरिरभूत्वा डॉ. हर्षदेव माधव द्वारा लिखित एक संस्कृत उपन्यास है। उपन्यास डायरी के रूप में है। यह डॉ. माधव का एक नवाचार और रचनात्मक प्रयोग है जहां उन्होंने एक असहाय यक्ष के जीवन से डायरी विकसित की है, जिसे उसके गुरु कुबेर ने अपने मूल दिव्य निवास अलका शहर और उसकी प्यारी पत्नी से दूर रामगिरी पहाड़ियों में निर्वासित करने का श्राप दिया था।

यह उपन्यास कालिदास के मेघदूतम पर आधारित है। लेखक ने यक्ष की डायरी को चार भागों में विभाजित किया है: 1. श्यामा मेघा 2. अरुणा मेघा 3. रक्त मेघा और 4. सुवर्ण मेघा। लेखक ने 158 दिनों की डायरी लिखी है। यक्ष की डायरी कार्तिक एकादशी से शुरू होती है।

पहले भाग में यक्ष का अलका से निर्वासन और उसकी पीड़ा का प्रतीक शामिल है। दूसरे मेघ में पार्थिवी और यक्ष के पुनर्जन्म की कल्पना की कथा है। यह लेखक की अपनी कल्पना है. बाकी दो भागों में पार्थिवी के अपहरण और उसके रक्षक यक्ष, पृथ्वी पर लोगों के जीवन, भारत के तीर्थों का वर्णन है। देवी कामाक्षी का मंदिर, पुरी जगन्नाथ और कुरूक्षेत्र आदि। कालिदास के संस्करण के अनुसार यक्ष को रामगिरि पहाड़ियों में एक वर्ष बिताना था। प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. माधव कल्पना करते हैं कि यक्ष ने वहां अपना समय कैसे व्यतीत किया होगा। वे उसे अलौकिक और अजीब के रूप में दिखाई दिए, जिससे उसकी प्रतिक्रियाएँ अद्भुत और अद्भुत हो गईं, हालाँकि वे सभी उसकी महिला प्रेम से अलग होने पर दुःख और दर्द से ग्रस्त थे।

सत्यव्रत शास्त्री कार्य के बारे में टिप्पणी करते हैं:

"यह कृति एक ऐसे व्यक्ति की डायरी है जो मोह के कारण कर्तव्य की उपेक्षा के कारण अनुग्रह से गिर गया है, एक युवा व्यक्ति में अपनी महिला प्रेम के लिए सामान्य है और परिणामस्वरूप तनाव में है, लेकिन फिर भी वह इतना साहसी है कि वह अपने स्वामी के सामने घुटने टेकने और रेंगने के बिना अपनी गरिमा बनाए रख सकता है। सज़ा माफ़ करने के लिए – लेखक की ओर से यक्ष प्रकरण पर एक नया दृष्टिकोण। यह यक्ष की डायरी नहीं है जैसा कि आमतौर पर डायरी होती है, बल्कि यक्ष की डायरी है। यही वह चीज़ है जो कृतियों को एक विशिष्ट चरित्र प्रदान करती है, साहित्यिक सृजन में कुछ अद्वितीय बनाती है।''

डॉ. राधावल्लभ अपनी भूमिका में लिखते हैं –

आयं न्यूनता माधवेन मूको रामिगररभूतत्वेति नाम्ना ईपन्यासं विरच्य पूररता । यथा कालिदासेन मेघदूतं रणीय सवतथा नवीनेव दूतकाव्यिवधा संस्कृतसाहि त्यपरम्प्परायां स्थापिता, तथैव माधवनेन मेघदूतस्यैव भावसंसारं विषयवस्तु चोपजीव्य दैनिन्दनीशेल्या उपन्यासं रणीय समकालिकसंस्कृ तसाहित्ये काचन नवीना विधा स्थापिता । यतो हि उपन्यासोऽयं उपन्यासस्य वर्तमानसाहित्ये रचिलता रूढां वा संरचनामितक्रामित । मेघदूत न स्थूलघटनानां आितवृत्तस्य वा राधान्यम्, अपितु भावसंसारस्योन्मीलनम्, अंत : प्रकृत्या बाह्यरकृ तेश्च सात्म्यम्, तादात्म्यं वा । एतच्च सात्म्यं तादात्म्यं वा माधवेन समकालिकभावबोधसन्दभेषु सवतथा नवीनतया चररताथततां नीत आत्यि विशेषः । अस्मिन् उपन्यासे स एव यिः स एव रामिगरि : परन्तु जललवमुचः सारङ्गा मेघाय मागं न सूचयिन्त, सूचीभिन्नैः के तकैपाण्डुच्छायोपवनवृतयः गृहबिलभुजां काकानां नीडारम्प्भैव्यातकु ला ग्रामचैत्या न तिसंती , न वा सिन्त कितपयकदनस्थायिहंसा दशाणातः ।

कलानाथ शास्त्री लिखते हैं –

यक्ष की डायरी के चारों मेघ, श्याम मेघ, अरुण मेघ, रक्तमेघ और सुवणतमेघ मौलिक एवं सजतनात्मक कल्पना की भावभीनी ईडान के ि◌वस्मयकारी ि◌नदशतन हैं । पूरी डायरी □छूती, सवतथा नूतन और नव रयोगोत्त किवकल्पना का हृदयावजतक फलक रस्तुत करती है । मेरा तो यह मानना है कक आस रकार की रयोगधमी, क्रान्तदशी नूतन योजनाएँ संस्कृ त के ईस चिरयौवन का रमाण देती है, जिसकी प्रशंसा हम करते हैं । उपन्यास में अनेक योजनाएँ ऐसी हैं जो नवीन उद्भावना के कारण चाहे एक बार चोंका देती हैं, कि न्तु पूरी तरह हृदय को संभानित कर जाती हैं । रत्नेश्वर जेसे खलननायक की कल्पना तक तो □न्य संस्कृ त रचनाकार भी शायद चले जाएँ कि न्तु यि के पूवत जन्मों की उद्भावना पार्मथवी के साथ उसका जन्म-जन्मातर का सम्प्बन्ध, शाप मुक्ति के बाद भी न लोटने का संकल्प, ये सब नवीन स योग धमी उद्भावनाए डॉ. हर्ष देव माधव जैसे मौलिक प्रतिसंपन्न सजतक ही कर सकते हैं ।

अहाता-काश्मीरम्

अहाता-काश्मीरम बलभद्र प्रसाद शास्त्री द्वारा लिखित एक आधुनिक संस्कृत उपन्यास है। इसे लेखक ने स्वयं 2008 में बरेली (यूपी) से प्रकाशित किया है। यह उपन्यास कश्मीरी लोगों के जीवन पर आधारित है जो हर रोज आतंकवादी हमलों, सांप्रदायिक दंगों, आतंकवादियों द्वारा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार आदि जैसी स्थितियों का सामना करते हैं। उपन्यास में वीरता की भी प्रशंसा की गई है भारतीय सेना की और भारतीय सैनिकों की वीरता की. उपन्यासकार ने काल्पनिक पात्रों के माध्यम से कश्मीर के दर्द को दिखाने की कोशिश की है। उपन्यास की शुरुआत सेवानिवृत्त कर्नल प्रभाकर से होती है जो अपनी पत्नी सुमित्रा और प्रज्ञा नाम की बेटी के साथ रह रहे थे। उनका बेटा रविकांत सिपाही है और देश की सेवा कर रहा है। सुमित्रा के चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार ने उन माताओं के दर्द का मार्मिक चित्रण किया है जिनका बेटा सेना में है और जो हमेशा अपने बेटे की भलाई के लिए चिंतित रहती हैं।

जब रविकांत को युद्ध में गोली लग जाती है और उसे खून की जरूरत होती है। उनके दोस्त अब्दुल रहमान, जो धर्म से मुस्लिम हैं, ने रविकांत को अपना खून दिया और उनकी जान बचाई। बाद में पता चला कि अब्दुल की मां मनीषा कर्नल की पूर्व प्रेमिका है। रविकांत और अब्दुल की बहन जिसका नाम प्रभा है, एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। लेकिन, धर्म अलग होने के कारण उन्हें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। रविकांत के पिता उसकी शादी अपने दोस्त की बेटी से कराना चाहते थे। लेकिन, अंत में सब कुछ अपनी जगह पर हो जाता है और रविकांत और प्रभा की शादी हो जाती है। अब्दुल की माँ को आतंकवादियों ने गोली मार दी और बाद में उनकी मृत्यु हो गई और इससे कर्नल और शमशूल रहमान दुखी हो गए। बाद में शमशूल रहमान और कर्नल दोनों ने मतभेदों को भुलाकर हिंदू और मुस्लिम की एकता के लिए काम करने का फैसला किया। आख़िरकार शमशूल रहमान एक प्रमुख नेता के रूप में उभरे। उपन्यास का अंत श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोक के उद्धरण के साथ होता है।

प्रस्तावना में उपन्यास के बारे में निम्नलिखित पंक्तियाँ हैं:

अस्मिन् काव्ये एका पीडीतरेमकथाऽप्यास्ते । उग्रवाकदनामातङ्के न सह तेषां मनोव्यथापि वर्तते । स्नेहस्य ककिञ्चत् सुखदिणाः सिन्त, परं विरहवेदनापि विद्यते । कार्मगल युध्धस्य गाम्भीयतमध्य एव *विकचीभूतानि स्नेहपुष्पाण्यिप सिन्त । अपि आस्लामधमातन्धानां क्रूरता अस्ति , परं तस्यैव धमतस्य परमोच्चचररिमिप प्रस्तुतीभूतं वद्यतेऽस्मिन् काव्ये, येन धर्मसमरसतापि विकिसताऽभूत् । वियोग संयोगयोः प्रभावि दृश्यानि सिन्त, तथैव पतनोत्थान दृश्येषु दैवरभावस्य चमत्कारोऽपि जनमनः रसादको विद्यते । सामान्यदृष्टया काव्यमेतद् सरल वाक्यिवन्यासैः, मनोहरर* सम्प्वादैः, *कथारवाहैः, सहृदयबुधाजनान्नभावयेकदित अशास्महे ।*

<u>कथासंग्रह</u>

निम्नापृथिवी

यह 2001 में प्रकाशित प्रसिद्ध संस्कृत लेखक केशव चंद्र दास की कहानियों का संकलन है। यह मनुष्य और समाज के विभिन्न पहलुओं पर 37 लघु कहानियों का नवीनतम संग्रह है। कुछ कहानियाँ ऐसी हैं, जो कहानीकार के रूप में लेखक की वास्तविक साहित्यिक ऊँचाई को दर्शाती हैं।

क्र. सं.	कहानी का नाम
1	प्रणयपीयूषम्
2	श्वेतपद्मम्

3	रेणुगृहम्
4	धूलिधूमः
5	भयभूतः
6	दग्धचिन्नका
7	पापपङ्कः
8	नष्टनिमि
9	नरपशुः
10	ताम्बूलम्
11	जिालजालम्
12	छिन्नच्छाया
13	महारसादम्
14	सहसूत्रम
15	महारण्यम्
16	दायित्वम्
17	मुक्ति मागतः
18	विश्वासः
19	स्वणतिपिरम्
20	अकिस्मकम्

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

मूल अपराध के सबूत मिटाने के लिए एक के बाद एक हत्या करते जाओ (ईद्धन्निमलिन्दः, पृ. 30-31) गरीबी ने समाज के एक वर्ग से मानवीय चरित्र छीन लिये हैं। रिक्शा चलाने वाले का भाई आजीविका के रूप में अपराध का सहारा लेकर अमीर बन जाता है (जीविका पृ. 4-5)। इत्यक्त-कदगन्तः (पृ. 26-27) एक जोड़े के तलाकशुदा जीवन पर एक सफल कहानी है, जहाँ पति रंजन फिर से अपनी तलाकशुदा पत्नी की ओर आकर्षित होता है, क्योंकि उसे इस बीच एक अच्छी नौकरी मिल गई है।

लेखक ने अपनी कुछ कहानियों जैसे पापी, मुहुत्तत्स्य आत्मलिपः, मरालः और श्वेत-वसंतः में वृद्धों की समस्याओं को विषय के रूप में लिया है। मानवीय संवेदना पर उनकी कहानियाँ संस्कृत कहानियों को भी एक नई दिशा देती हैं, हालाँकि उनके सौंदर्य और दार्शनिक आकर्षण के लिए और अधिक शोधन करना पड़ता है। □वयक्षमश्रु (पृ. 36-37) समलैंगिक विषय पर आधारित एक कहानी है। घटचंरः (पृ. 48-49) भाई और बहन के बीच प्यार की झलक की कहानी है जो उनकी आत्महत्या में परिणत होती है। सुभारा (पृ. 63-66) मनुष्य के नैतिक या आध्यात्मिक और कामुक प्रोफाइल के बीच संघर्ष पर एक कहानी है। व्याहृतः (पृ. 46-47) एक और प्रभावशाली कहानी है जहां एक विधवा शहर छोड़ देती है क्योंकि लोग उसकी सुंदरता पर नजर

रखते हैं और अक्सर कामुक इच्छाओं के साथ उसके करीब आने की कोशिश करते हैं। इनजटानरकोइम (पृ. 34-35) काजोलिंग रुग्ण कामुकता और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति के प्रति समर्पण न करने के दृढ़ संकल्प की गहरी छाप छोड़ता है। आद्याशा (पृ. 32-33) सत्य की खोज के लिए गृहस्थ जीवन को ब्रह्मचर्य के जीवन से बेहतर बताती है। यह सिद्धांत एक युवा महिला पर विकसित किया गया है जो एक आध्यात्मिक उपदेशक के रूप में लोगों को प्रभावित करती है लेकिन अंदर से खालीपन महसूस करती है क्योंकि उसके आध्यात्मिक मार्गदर्शक, जो कि वरिष्ठ उपदेशक है, द्वारा उसका यौन शोषण किया जाता है।

चिन्नच्चया

चिन्नछाया रवीन्द्र कुमार पांडा द्वारा लिखित लघु कहानियों का एक संग्रह है। लघुकथाओं के इस संकलन में संस्कृत में बीस कहानियाँ हैं।

संग्रह में निम्नलिखित कहानियाँ हैं:

डॉ. पांडा ने अपनी किताब में कई सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डाला है. पहली कहानी प्रणयपीयुषम विधवा पुनर्विवाह पर लेखक के क्रांतिकारी विचार को दर्शाती है जिसे समाज में ज्यादातर स्वीकार नहीं किया जाता है। यहाँ, नायक विश्वम्भर ने अपनी बूढ़ी प्रेमिका सुमी को प्रपोज किया जो अब विधवा है। बाद में वे सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत करते हैं। श्वेतपद्मम इस संग्रह की दूसरी कहानी है। इस कहानी में एक चतुर महिला प्रोफेसर जो पाखंडी है और अपने द्वारा किए गए सभी शैक्षणिक और अनुसंधान संबंधी कार्यों से निर्दोष लेखक का शोषण करती है। कहानी ऐसी लगती है जैसे लेखक का निजी अनुभव कथा रूप में बदल गया हो। रेनुगृहम एक और ज्वलंत सामाजिक मुद्दे वेश्यावृत्ति पर केंद्रित है। कहानी का नायक रमाकांत है, जो एक बार अपने मूल स्थान पर जाता है। उसी समय उन्हें अपनी सहपाठी जयलक्ष्मी के बारे में पता चला जो गरीबी के कारण वेश्या बन गयी थी। धुलिधुमह बूढ़े लोगों की समस्याओं का चित्रण है। रिटायरमेंट के बाद उनके लिए समय काटना कितना मुश्किल हो जाता है। कहानी में सेवानिवृत्ति प्राप्त वृद्ध राधेश्याम बाबू की मानसिक पीड़ा और दुख को दर्शाया गया है। भयभूत: का विषय दुनिया भर में फैले मुद्दे आतंकवाद और सांप्रदायिक दंगों पर केंद्रित है। दग्धाचंद्रिका ने एक और ज्वलंत सामाजिक बुराई का खुलासा किया। बलात्कार. यह दिल छू लेने वाली कहानी है गैंग रेप की शिकार बनी विमला की। उसके तथाकथित शुभचिंतकों ने उसकी हालत का फायदा उठाया और उसके साथ बलात्कार किया। जब वह शिकायत दर्ज कराने जाती है तो उसे अपमानित किया जाता है। ये समाज की हकीकत है. पापपंकाह एक ऐसी कहानी है जहां एक नौकरानी का उसके मालिक द्वारा यौन उत्पीड़न किया जाता है। नास्तानक्षत्रम मधुकर के टूटे हुए जीवन का वर्णन है। उनकी पत्नी स्मिता उन्हें दो छोटे बच्चों के साथ इस बड़ी दुनिया में अकेला छोड़कर स्वर्ग चली गईं। ताम्बुलम लेखक के पान खाने के प्रति प्रेम को दर्शाता है। जंजालजलम यामिनी नाम की गृहिणी की कहानी है जो परिवार की खातिर अपने सपनों का बलिदान देती है। शीर्षक कहानी चिन्नाचैया मधुरिमा की दयनीय स्थिति का वर्णन करती है जिसने सुनामी में अपने पति को खो दिया था। महाप्रसादम ने बाल विवाह नामक सामाजिक बुराई का खुलासा किया। स्नेहसूत्रम अपने बेटे गोपाल के लिए माता-पिता के प्यार की एक सरल कहानी है जो अपनी शिक्षा पूरी करके वापस आ रहा है। महराण्यम राधामाधव नाम के एक प्रोफेसर की कहानी है। डॉ. पांडा ने कहानी में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की बुराइयों का खुलासा किया। नरपशुः बहादुर महिला नंदिनी की कहानी है जिसे उसके पति ने तब त्याग दिया था जब वह गर्भवती थी। जिन्होंने बिना किसी की मदद के अकेले ही अपने दोनों बच्चों की परवरिश की। स्वर्णपिंजरम स्मिता नाम की एक प्रतिभाशाली लड़की है जो उच्च अध्ययन के लिए जाने को तैयार है। लेकिन उसकी शादी एक धनी व्यक्ति से हो गई और अंततः उसे शिक्षित और स्वतंत्र होने के अपने सपनों को भूलकर एक गृहिणी का जीवन स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

डॉ. पांडा की कहानियाँ मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों, विवरणों आदि से भरपूर हैं। लेखक ने कई मुहावरों और कहावतों का उपयोग किया है। उन्होंने कहानियों में कई अंग्रेजी शब्दों

का इस्तेमाल किया। उन्होंने धर्मग्रंथों से कुछ श्लोक उद्धृत किये जो उनके शास्त्रों के ज्ञान को दर्शाते हैं।

कथालहरी

कथालहरी एच.वी. की लघु कहानियों का संग्रह है। नागराजा राव. इसे 2009 में संस्कृत भारती, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। कहानियों के इस संकलन में विभिन्न विषयों पर 14 कहानियाँ हैं। उनकी कहानियाँ इस पुरुष प्रधान समाज में मानवीय भावनाओं, महिलाओं की समस्याओं और पीड़ाओं और अन्य सामाजिक बुराइयों को उजागर करती हैं। मानवकुलम एकम एव भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था को उजागर करने वाली कहानी है। यह दो प्रेमियों गणेश और हरिणी को अलग कर देता है लेकिन अंत में उन्हें सुखद अंत मिलता है। स्वार्थी एक कहानी है जो बताती है कि कैसे भारतीय दुल्हनें भारतीय युवाओं में धोखाधड़ी वाली शादियों और विदेश में बसने के पागलपन का शिकार हो गईं। जालम में दिखाया गया है कि कैसे रमेश जैसे भारतीय छात्र जो विदेशों में पढ़ने गए थे, उन्हें विदेशियों ने धोखा दिया और अवैध गतिविधियों में फंसा दिया। विजया एक महिला स्कूल टीचर की कहानी है जिसे शादी के बाद अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है और घरेलू काम-काज देखना पड़ता है। कहानी बताती है कि उच्च शिक्षा लेने के बाद भी महिलाओं को किस तरह कष्ट सहना पड़ता है। नष्टमधनपात्रम् समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार नामक बुराई का वर्णन कर रहा है। पूरी कहानी पुलिस अधिकारी के अमानवीय दृष्टिकोण और पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करती है। भाविव्यता सिने जगत की कड़वी सच्चाई को उजागर करती है। मशहूर अभिनेता संजीव कुमार जो कभी स्टार थे और कई लोगों के दिलों की धड़कन थे, आज भिखारी की तरह अपनी जिंदगी जी रहे हैं। सिट्राजगत ग्लैमरस सिने जगत को उजागर करने वाली एक और कहानी है। श्रोरी फिल्म उद्योग में नए लोगों के संघर्ष को दर्शाती है। बिना किसी सपोर्ट या गॉड फादर के फिल्म इंडस्ट्री में टिके रहना मुश्किल है। भावना किद्रशी तस्य मेहनती लड़की कमला की कहानी है। उसके बॉस उसके काम और तौर-तरीके से बहुत प्रभावित हुए। वह अपने प्रति बॉस के अधिक स्नेह से असहज महसूस करती है। लेकिन आख़िरकार पता चला कि बॉस उसकी शादी अपने छोटे भाई से कराना चाहता है। कहानी सुखद नोट्स के साथ समाप्त होती है। मामा मनोरमा लेखक और राम की दिल को छू लेने वाली, उनके अलगाव और दुखद अंत की प्रेम कहानी है। मालविका दो संस्कृत प्रेमियों आनंद और मालविका की एक खूबसूरत प्रेम कहानी है। आनंद की आर्थिक स्थिति और उसके माता-पिता के अमीर लड़की से शादी करने के दबाव के कारण वे अलग हो गए। लेकिन आख़िरकार उन्हें हमेशा की ख़ुशी मिल गई।

कटु अनुभव: विश्वनाथ के अपहरण के कड़वे अनुभव की कहानी है। बदमाशों ने उसे कोई और समझा और अपहरण कर लिया। बाद में उन्होंने उनके बारे में किसी से एक भी शब्द न कहने की धमकी देकर उसे छोड़ दिया। अगली कहानी भाषानम् नैव कर्तव्यम् एक प्रफुल्लित करने वाली कहानी है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान देने का शौक लेखक को अपमान और शर्मिंदगी का कारण बनता है। वरानवेशनम एक बार फिर एक हास्य कहानी है जहां लेखक और उसके दोस्त माधव को माधव की बहन ललिता के लिए दूल्हे की तलाश करने का काम सौंपा गया है। लेकिन जब वे शादी के लिए एक लड़के से मिलने गए तो लड़के के पिता ने उन्हें अपने बेटे की जगह अपनी दो अविवाहित बेटियाँ दिखा दीं। इससे हंसी आती है.

एच.वी. नागराजराव एक प्रख्यात संस्कृत विद्वान हैं। उनका लेखन सुस्पष्ट और स्पष्ट है। उनकी कहानियाँ वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों की वास्तविकताओं के करीब हैं। लेखक को हास्य तत्व बनाने में विशेषज्ञता हासिल है। भाषानं नैव कर्त्तव्यम् और वर्णवेषणम् इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

अनाभिप्सितम्: अनाभिप्सितम प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान प्रशस्त्यमित्र शास्त्री की लघु कहानियों का एक संग्रह है। लेखक अपनी हास्य रचनाओं के लिए संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं। उनकी कृतियाँ हसविलासा और नर्मदा उनके हास्य लेखन कौशल का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। प्रस्तुत कहानी संग्रह

अनाभिप्सितम् में 12 कहानियाँ हैं। कहानियाँ आधुनिक समाज की समस्याओं से जुड़ी हैं। अधिकतर कहानियाँ महिला प्रधान हैं जो महिलाओं की समस्याओं पर केन्द्रित हैं।

अमृता स्मृति पद्मजा नाम की एक मजबूत लड़की की कहानी है जिसके पास दृढ़ इच्छा शक्ति और विचारधारा है। हालाँकि वह करोड़पति की बेटी थी, फिर भी वह बहुत सरल थी और उसने एक गरीब कलाकार से शादी की। उसके माता-पिता ने उसका बहिष्कार कर दिया। उन्होंने अपने पति को कैंसर में खो दिया। इसलिए उन्होंने अपने माता-पिता के घर वापस जाने के बजाय कैंसर के रोगियों की सेवा करने का फैसला किया। गुंडा गुरुसिम्हा एक ऐसे अपराधी की कहानी है जो खुद को बदलने का मौका चाहता है। लेकिन समाज यह नहीं देता. आख़िरकार राजकिशोर ने उन्हें मौका दिया और अब गुरुसिम्हा अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जीते हैं। यह कहानी एक और सामाजिक बुराई यानि दहेज पर प्रकाश डालती है। शीर्षक कहानी अनाभिप्सितम् में परंपरा बनाम आधुनिक मूल्यों का टकराव है। यह एकल माता-पिता मालिनी और उनकी बेटी सुभद्रा की कहानी है। सुभद्रा को अस्वीकार कर दिया गया या हम अनभिप्सितम (अवांछित) कह सकते हैं क्योंकि एन.आर.आई दूल्हा पारंपरिक मूल्यों वाली और खाना पकाने आदि में पारंगत लड़की चाहता है। विवशाता युवाओं में विदेश के प्रति दीवानगी पर प्रकाश डालती है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने रामप्रताप के दुःखमय जीवन का वर्णन किया है जिनका इकलौता पुत्र अनुजप्रताप अपने बूढ़े पिता को अकेला छोड़कर विदेश चला गया और स्थायी रूप से वहीं बस गया और फिर कभी वापस नहीं आया। अद्वितीयम प्रेमम मजबूत इरादों वाली लड़की कल्पना की कहानी है जिसने अपने कायर मंगेतर से शादी करने से इनकार कर दिया और एक अनजान लड़के से शादी करने का फैसला किया जिसने कल्पना को गुंडों से बचाने के लिए अपनी एक आंख का बलिदान दे दिया। ज्वजल्यमान जीवनज्योतिः एक वृद्ध महिला वसुधा की दुखद कहानी है, जिसे उसके पति दिवाकर की मृत्यु के बाद उसके अपने बच्चों ने त्याग दिया था और वृद्धाश्रम भेज दिया था। प्रचंड प्रतीक्षा वैशाली की कहानी है जिसका पति उसे छोड़कर विदेश चला गया और फिर कभी वापस नहीं लौटा। वैशाली ने जीवन भर उसका इंतजार किया. आख़िरकार उसके पति की जगह उसका सौतेला बेटा उसके साथ रहने आया। अपराजिता एक कमला की कहानी है जिसे अपने ससुराल से इसलिए भगा दिया गया क्योंकि उसने लड़की को जन्म दिया था। वह अपनी माँ के आग्रह पर पुनर्विवाह करती है। लेकिन उसका दूसरा पति उसकी बेटी पर अत्याचार करता था और उसके साथ गुलामों जैसा व्यवहार करता था। इसलिए आख़िरकार वह अपने भाई के घर वापस आ गई, जो उन्हें नापसंद था। लेकिन उसने दृढ़ता से घोषणा की कि यह उसके पिता का घर है इसलिए कोई भी मुझे यहां से नहीं निकाल सकता। कथं पुनः प्रत्यगमः एक बार फिर दृढ़ इच्छा शक्ति वाली एक महिला मैत्रयी की कहानी है जो अपने बेटे और बहू के कारण अपने पोते के साथ उनके घर वापस जाने से इनकार कर देती है। 'अंतिमम आह्वनम्' अपर्णा के परिवर्तन की कहानी है। अपर्णा अलग हो चुके माता-पिता की संतान थीं। इसलिए वह सामाजिक रिश्तों आदि में विश्वास नहीं करती। वह अलग रहना पसंद करती है. एक बार उसकी पड़ोसन आंटी उसके घर आई। लेकिन, वह दरवाज़ा नहीं खोलती क्योंकि उसे लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं है। बाद में उसे पता चला कि आंटी मदद मांगने आई थी। उनके पति की हालत गंभीर थी और तत्काल मदद के अभाव में उनकी मृत्यु हो गई। इससे अपर्णा का जीवन के प्रति नजरिया बदल गया। स्नेहसदनस्य स्वप्नः वसुन्धरा की कहानी है जो हमेशा प्यार से भरा एक सपनों का घर चाहती थी। लेकिन बचपन में ही उनकी माँ की मृत्यु हो गई इसलिए उनकी सौतेली माँ ने उन्हें कभी चैन से नहीं रहने दिया। जब उसकी शादी हुई तो उसका पति उससे कभी प्यार नहीं करता था और उसे बोझ समझता था। बुढ़ापे में उसकी बहू निर्मला उसे अपने जीवन में नहीं चाहती। इसलिए उन्होंने उसे वृद्धाश्रम में छोड़ दिया। जहां उसकी मुलाकात जीवनसाथी के रूप में इंद्रकुमार से हुई और वे पुराने घर से निकल कर फ्लैट में रहने लगे। आख़िरकार वसुन्धरा का अपना प्यारा घर बनाने का सपना पूरा हो गया। प्रशस्य मित्र शास्त्री की कहानियाँ विभिन्न विषयवस्तुओं से संबंधित हैं। उन्होंने समसामयिक सामाजिक मुद्दों की ओर संकेत किया। उनकी कहानियों में महिला पात्रों का संघर्ष और वृद्ध माता-पिता के प्रति करुणा आदि पर प्रकाश डाला गया है। उनकी कहानियाँ विभिन्न मानवीय

भावनाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। उनकी कहानियाँ महिला सशक्तिकरण और महिलाओं की आज़ादी का जश्न मनाती हैं। प्रशस्य मित्र शास्त्री की भाषा सरल और अस्पष्टता से रहित है।

कथावल्लरी: कथावल्लरी (लघु कहानी संग्रह) श्री कृष्ण सेमवाल द्वारा संपादित है, 2005-06 में प्रकाशित। इसमें विभिन्न संस्कृत विद्वानों जैसे प्रभुनाथ द्विवेदी, नारायण दाश, डॉ. शिव सोयस टिपथी आदि द्वारा लिखी गई 25 लघु कथाएँ शामिल हैं।

पथिकानुभूति: पथिकानुभूति भी 2005 में प्रकाशित वासनी ब्रह्मपुरम द्वारा संस्कृत में एक लघु कहानी संग्रह है। इसमें विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई कुल 25 कहानियाँ हैं। इस कहानी संग्रह में राधावल्लभ त्रिपाठी, हर्षदेव माधव, बनमाली बिस्वाल आदि विद्वानों द्वारा लिखी गयी कहानियाँ हैं।

यात्रा वृतांत, डायरी एवं अन्य गद्य रचनाएँ

लौहपुरुष-वल्लभचरितम्

लौहपुरुष-वल्लभचरितम् डॉ. सत्यपाल शर्मा द्वारा लिखित गद्य है। काव्य को 2009 में भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया था। काव्य को 12 निश्वासों में विभाजित किया गया है। लेखक के पास इस गद्यकाव्य का हिन्दी अनुवाद भी है। लेखक ने इस गद्यकाव्य की रचना के लिए महान व्यक्तित्व वाले सरदारवल्लभभाई पटेल को चुना। लेखक ने पटेल के जीवन की सभी महत्वपूर्ण घटनाओं, उनके परिवार, उनके बचपन, बारदोली सत्याग्रह, कैसे उन्होंने भारत को अविभाजित बनाया, का वर्णन किया है। लेखक पटेल के गौरवशाली, साहसी, ईमानदार व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने यह गद्यकाव्य लिखा, जिसमें पुस्तक के पुरोवाक में पटेल के चरित्र का वर्णन किया गया है।

पाश्चत्य-संस्कृतम्: आचार्य दिगंबर महापात्रा के यात्रा वृतांत पाश्चात्यसंस्कृत तम पाश्चात्य-संस्कृतम् (पश्चिमी समकक्ष की संस्कृत) में एक विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में मॉस्को में रहने के दौरान बहुत गर्मजोशी से जमा की गई गहरी भावनाएं और अनुभव शामिल हैं। जो घटनाएँ घटित हुईं और जिन समस्याओं का उन्होंने सामना किया, वे विदेशी देशों के दौरे का साधारण वर्णन नहीं हैं, बल्कि यह सांस्कृतिक और दार्शनिक तत्वों के मुद्दों पर लेखक की गहरी चिंता व्यक्त करता है जो अंतर्धारा के रूप में प्रवाहित होते हैं और लोगों के जीवन की मूल बातें बनाते हैं। यात्रा वृतांत में दर्शाए गए देश। कहने की जरूरत नहीं है कि यह कार्य आधुनिक संस्कृत साहित्य पर पुनर्विचार का एक नया चैनल खोलता है जो हाल के दिनों में साहित्य की एक विशेष शाखा के रूप में यात्रा वृतांत पर ध्यान केंद्रित करने में विफल रहा है। लेखक बहुमुखी प्रतिभा के विद्वान हैं। उनके पास कई विद्वतापूर्ण पुस्तकें हैं जिनके लिए उन्हें अच्छी तरह से पहचाना गया है और कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्तमान लेखक की पुस्तकें संगीत, सौंदर्यशास्त्र, दर्शन और आध्यात्मिक प्रथाओं पर भारतीय विचार के प्रमुख क्षेत्र को कवर करती हैं, जिसका सार शांतिपूर्ण जीवन की ओर इशारा करता है और दुनिया की अधिक दबाव वाली समस्याओं को हल करने के लिए एक कार्यक्रम बनाता है, जिसका सामना एक आधुनिक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में करता है। प्रस्तुत यात्रा वृतांत संस्कृत में सरल गद्य का ताज़ा स्वरूप है। यह दार्शनिक सर्वोच्चता की व्यापकता के साथ-साथ सौंदर्य बोध की स्पष्टता की पुष्टि करता है। पारंपरिक पांडित्य के साथ एक प्रतिष्ठित विद्वान के रूप में पंडित श्री दिगंबर महापात्र अपनी गीतात्मक शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। एक संस्कृत लेखक के रूप में आधुनिक संस्कृत साहित्य के इतिहास में उनका प्रतिष्ठित स्थान है। वर्तमान कृति पाश्चात्य संस्कृतम् अत्यंत स्पष्ट संस्कृत में लिखा गया एक यात्रा वृतांत है। यात्रा वृतांत एक आधुनिक किस्म का साहित्य है। पं. महापात्रा का संस्कृत में इतनी विविधतापूर्ण लेखन का नेक और सफल प्रयास आधुनिक संस्कृत में एक नया और दुर्लभ मार्ग खोलता है। यह निश्चित रूप से संस्कृत के अन्य लेखकों को प्रेरित करेगा, खासकर जब पर्यटन अलग, अज्ञात और फिर भी दिलचस्प वातावरण में स्वयं को फिर से खोजने की एक वैश्विक घटना रही है। दो भागों में लिखी गई यह पुस्तक हॉलैंड और रूस के अनुभवों का स्मरण है। हालाँकि, जो बात अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि लेखक ने सिर्फ अपने पर्यटक अनुभवों का वर्णन नहीं किया है। पुस्तक के पहले भाग में, उन्होंने 1991 में विदेश में

अपने उपरोक्त अनुभवों का वर्णन किया है। उन्होंने हॉलैंड और रूस में विभिन्न पर्यटक खेलों की अपनी यात्रा का वर्णन किया है। अपने मेजबान संस्थान में प्रोफेसरों के साथ उनके संवाद, हॉलैंड और रूस में संस्कृत और समाज के बारे में छात्रों की धारणाओं का भी इस भाग में स्पष्ट रूप से समझने योग्य संस्कृत में वर्णन किया गया है।

पं. महापात्र का यात्रा वृतांत यादगार, समय और स्थान के विभिन्न ढाँचों का संग्रह है। कई अवसरों पर, विदेशी छात्रों, विद्वानों और लोगों के बीच उनके क्षण ज्ञानवर्धक और सद्भावना और प्रसन्नता से भरे हुए थे। विदेशी समाज और स्थानों में उनके क्षण पाठकों के लिए अत्यधिक ताज़ा हैं। ऐसा लगता है कि यह पुस्तक अपने पाठकों को लेखक द्वारा गुजरे समय और स्थान तक ले जाने की क्षमता रखती है। पाठक उनकी भावनाओं और अनुभवों को प्रासंगिक दस्तावेजों और संग्रहालयों, ऐतिहासिक स्थानों और कक्षा-कक्ष की शिक्षाओं की तस्वीरों के माध्यम से अधिक गहनता से साझा करेंगे जिन्हें लेखक ने पुस्तक में शामिल किया है। पुस्तक उस संतुष्टि से चमकती है जो लेखक को महर्षिजी की इच्छा के अनुसार उनकी सार्थक यात्रा के कारण और संस्कृत भाषा और इसकी शिक्षण तकनीकों पर हॉलैंड और मॉस्को के विश्वविद्यालय के छात्रों की सकारात्मक राय के कारण महसूस होती है। दोनों देशों में लेखक को प्रस्तुत किए गए ओपिनियन-एल्बम के अंश विदेशी भूमि में अर्जित प्यार और सम्मान की पुष्टि करते हैं। यहां के आधुनिक संस्कृत लेखकों ने इक्कीसवीं सदी को किसी भी आधुनिक भाषा के बराबर संस्कृत के पुनरुद्धार की सदी बना दिया है। इन आधुनिक संस्कृत लेखकों में आचार्य दिगंबर महापात्र सबसे प्रमुख हैं। उनके पाश्चात्य संस्कृतम् से संस्कृत में यात्रा वृतांत लिखने का चलन सुप्रसिद्ध है। और पाठकों द्वारा इस पुस्तक को खुले दिल से स्वीकार किये जाने को लेकर मेरे मन में कोई संदेह नहीं है।

निष्कर्ष

आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्य, जैसे "नवविमुक्ति" और "हेमशक्तिकम", समकालीन चुनौतियों के साथ पारंपरिक कहानी कहने का मिश्रण है। ये उपन्यास डॉ. एच.वी. जैसे विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। नागराज राव और डॉ. विश्वास, प्रेम, विश्वासघात, प्रतिकूलता और आध्यात्मिक ज्ञान जैसे विषयों का पता लगाते हैं। "नवविमुक्ति" महाभारत के एक प्रमुख पात्र अष्टावक्र के जीवन को कुशलता से चित्रित करता है, जबकि "हेमशक्तिकम" शूद्रक के शास्त्रीय नाटक "मृच्छकटिकम" पर आधारित फिल्म और टेलीविजन उद्योग पर आधारित है। उपन्यास एक संस्कृत प्रोफेसर विद्यासागर के जीवन की पड़ताल करता है, जो खुद को मनोरंजन उद्योग में उलझा हुआ पाता है। दोनों उपन्यास संस्कृत साहित्य के पुनरुद्धार में योगदान देते हैं और आधुनिक चिंताओं को संबोधित करने में प्राचीन ज्ञान की स्थायी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करते हैं। वे संस्कृत भाषा और साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा और अनुकूलनशीलता और समकालीन दर्शकों के साथ जुड़ने की उनकी क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। संक्षेप में, ये उपन्यास आधुनिक संस्कृत गद्य की जीवंत और गतिशील प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं, जो शास्त्रीय स्रोतों से प्रेरणा लेकर और समकालीन विषयों से जुड़कर साहित्यिक परिदृश्य को विकसित और समृद्ध करता रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास" - राजेंद्र लाल मित्र
2. आधुनिक संस्कृत साहित्य का विकास - डॉ. रामनाथ शर्मा
3. संस्कृत गद्य साहित्य - डॉ. वसुधा दत्ता
4. आधुनिक संस्कृत गद्य साहित्य का स्वरूप और विकास - डॉ. विजय कुमारी
5. संस्कृत कविता का इतिहास - डॉ. सत्य व्रत शास्त्री
6. आधुनिक संस्कृत साहित्य का अध्ययन - डॉ. ज्योत्स्ना देवी
7. संस्कृत साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. रामनाथ मिश्र
8. आधुनिक संस्कृत साहित्य: एक अवलोकन - डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा
9. संस्कृत साहित्य में गद्य विधा का विकास - डॉ. मनीषा शर्मा
10. आधुनिक संस्कृत साहित्य में गद्य काव्य का स्थान - डॉ. राजेश कुमार शर्मा